वार्तालाप-601, फर्रुखाबाद (उ.प्र.), दिनांक 14.07.08
Disc.CD No.601, dated 14.07.08 at Farrukhabad (U.P.)
Extracts-Part-1

समयः 04.01-06.58

बाबाः शालिग्राम की वो बटिया जो सिंहासन में रख करके पूजी जाती है, सामान्य बटिया नहीं। ऐसे तो सभी 500 करोड़ आत्माएं सब ज्योति बिन्दु हैं। लेकिन सबसे जास्ती बंधन किनको लगता है? 84 जन्म लेने वालों को बंधन लगता है या कम जन्म लेने वाले आत्माओं को भी बंधन लगता है? (जिज्ञासु - 84 जन्म।) हाँ, जी। इसलिए जो 84 जन्म लेने वाली आत्माएं हैं, उनको सबसे जास्ती बंधन दिखाया जाता है। कम जन्म लेने वाली आत्माएं उनको तो बंधन लगता भी नहीं उतना पूरा। तो वो पूरे पूजनीय भी नहीं बनते हैं। 84 जन्म लेने वाले पूरे पूजनीय भी बनते हैं। इसलिए सबको बंधन नहीं दिखाया जाता । 84 जन्म लेने वाले शालिग्रामों को बंधन दिखाया जाता है। कोई भी रुद्र यज्ञ रचेंगे, लाख शालिग्राम जरूर बनावेंगे। सवेरे-सवेरे बनावेंगे, शाम को तोड़ देंगे। बार-बार ये प्रक्रिया चालू रहती है। ये शूटिंग पीरियड की यादगार है। यज्ञ के आदि में भी वो आत्माएं मौजूद थी। सिंध हैदराबाद में 9 लाख आत्माएं भी मौजूद थी। फिर क्या हुआ? टूट गई है माला मोती बिखर गए। कहाँ के कहाँ जा करके गिरे। अभी फिर बिखरे हुए बच्चों को बाप इकट्ठा करते हैं। जिनको कड़क बंधन लगता है वो ही बाप को जास्ती पुकारते हैं - बंधन से छुड़ाओ।

Time: 04.01-06.58
Baba: That *batiyaa* (small stone) of *shaligram*[1] which is kept on a throne and worshipped is not an ordinary stone. In a way, all the 5 billion (500 crore) souls are points of light. But who are bound in bondages the most? Are those who have 84 births bound in bondages or are the souls which have fewer births also bound in bondages? (Student: 84 births.) Yes. This is why the souls which have 84 births are shown to be bound in bondages the most. The souls which have fewer births are not bound in bondages completely to that extent. They do not become completely worship worthy either. Those who have 84 births become completely worship worthy as well. This is why all of them are not shown to be in bondages. The *shaligram* who have 84 births are shown to be in bondages. If any *Rudra yagya* is organized, they definitely prepare hundred thousand (lakh) *shaligram*. They prepare it early in the morning and break it in the evening. This process continues again and again. It is a memorial of the *shooting period*. Even in the beginning of the *yagya* those souls were present. 900 thousand (nine lakh) souls were also present in Sindh Hyderabad. Then what happened? The rosary has broken and the beads have scattered. Where they were and where they have fallen! Now the Father gathers all the children who have scattered. Only those who are entangled in strong bondage call the Father more: Liberate us from these bondages.

[1] Small round stones considered sacred in the path of *bhakti*.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समयः 07.20-31.44

जिज्ञासुः बाबा, ये जो बर्मुडा ट्रायंगल जगह का नाम है...

बाबाः बड़मूला ट्रायंगल। हाँ, जी।

जिज्ञासुः वहाँ जाने वाली जहाज, ऊपर की जहाज, उनको खींच के अपने में क्यों समा लेते हैं? उसका क्या कारण है?

बाबाः बेहद को समझ जाएंगे तो हद को भी समझ जाएंगे। बेहद ब्राह्मणों की दुनिया में भूत-प्रेतानी ब्राह्मणों का अड्डा है या नहीं है? भूत-प्रेत बनने वाले ब्राह्मण हैं या नहीं हैं? (जिज्ञासु - हैं बाबा।) हैं। ऐसे ही जो बाहर की दुनिया है, जब तक देवताओं की दुनिया रही तब तक भूत-प्रेत नहीं थे। फिर क्या हुआ? द्वापरयुग से पांच भूतों ने प्रवेश कर लिया। तो भूत-प्रेतों की दुनिया बन गई। उसमें बड़मूला ट्रायंगल भी तैयार हो गया। झाड़ जब पूरा बड़ा हो जाता है तो उसकी छोटी-छोटी जड़ें भी होती हैं और बड़ी ते बड़ी एक जड़ भी होती है। झाड़ के चित्र में जड़ें दिखाई हैं ना। कोई बाईं ओर की जड़ें, कोई दाईं ओर की जड़ें। लेकिन सबसे बड़ी जड़ कौनसी होती है? दाईं ओर की, बाईं ओर की या बीच वाली? बीच वाली जड़ बड़ी जड़ है। मूल माने जड़। बड़ा मूला। ये सृष्टि रूपी वृक्ष है मनुष्यों का। इसका बड़ा मूल कौन है और बड़े ते बड़ा बीज कौन है? कोई है या नहीं है? मनुष्य सृष्टि का बीज कौन है? मालूम है? कौन? प्रजापिता। बीज है तो जरूर जड़ भी होगी। बीज अपने को ख़ाक में मिलाय देता है।

Time: 07.20-31.44
Student: Baba, this place named Bermuda Triangle...
Baba: Bermuda Triangle. Yes.
Student: Why does that place suck the ships that go there, the planes flying above it into itself? What is the reason?
Baba: If you understand the unlimited [reason], you will understand the limited [reason] as well. Is there a place of ghosts and spirits like Brahmins in the world of unlimited Brahmins or not? Are there Brahmins who becomes ghosts and spirits or not? (Student: Baba, there are.) There are. Similarly, in the outside world as long as it was a world of deities, there were no ghosts and spirits. What happened after that? Five ghosts entered from the Copper Age. So, it became a world of ghosts and spirits. The Bermuda Triangle also became ready in it. When a tree grows completely, then it has small roots as well a biggest root. Roots have been shown in the picture of the Tree, haven't there? Some are roots of the left side; some are roots of the right side. But which is the biggest root? Is it the one on the right side, the one on the left side or is it the middle one? The middle root is the big root. *Muul* means root. *Baraa muulaa* (the big root). This is a world tree of human beings. Who is its big root? And who is the biggest seed? Is there anyone or not? Who is the seed of the human world? Do you know? Who is it? Prajapita. If there is the seed, there will certainly be a root as well. The seed mixes itself in the soil.

जैसे बनियन ट्री दिखाया हुआ है। उसमें जो सनातन देवी-देवता धर्म की जड़ है वो प्रायःलोप है या पूरी लोप हो गई? प्रायःलोप है। माने गहराई में अगर खुदाई की जाए तो जहाँ-जहाँ नमी मिलेगी वो जड़ अवश्य मिलेगी। ऐसे बहुत से पेड़ होते हैं जिनकी लकड़ी दुधिया होती है। वो दूध वाली लकड़ी जब तक पानी में रहती है या जो हिस्सा पानी में रहता है वो कभी सड़ता नहीं है।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

इसलिए जो कुआं बनाया जाता है उस कुएं की दीवालें ऐसी लकड़ी के शिकंजे के ऊपर रखी जाती हैं। वो कुएं की फाउन्डेशन में रखी जाने वाली लकड़ी सड़ती नहीं है। तो मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ की भी एक जड़ है जो सड़ती नहीं है, परन्तु प्रायःलोप है। उस जड़ का नाम क्या है? बीज का तो नाम बताय दिया। ब्रह्मा। कुआं जो बनाया जाता है, उस कुएं की सारी ईंटों, सारे पत्थरों का वजन किसके ऊपर पड़ता है? वो ही लकड़ी का शिकंजा, जो फाउन्डेशन में होता है, उसी के ऊपर सारा वजन पड़ता है।

For example, the banyan tree has been depicted. Has the root of the Ancient Deity Religion in it disappeared almost or has it disappeared completely? It has almost disappeared. It means that if you dig deep, then wherever you get moisture, you will definitely find that root. There are many trees which have milk (sap) yielding wood. As long as such milk yielding wood remains in water or whatever portion of that wood remains in water never rots. This is why when a well is dug the walls of that well are based on such a circular wooden plank. That wood which is placed at the *foundation* of the well does not rot. So, there is a root of the human world tree as well which does not rot, but has almost disappeared. What is the name of that root? The name of the seed has been mentioned. Brahma. When a well is dug, who bears the weight of all the bricks, all the stones of the well? The same wooden plank, which lies at the *foundation*, bears the entire weight.

ब्रह्मा बाबा को भी बहुत चिन्ता रहती थी ज्ञान यज्ञ के परवरिश की, ज्ञान यज्ञ वत्सों के परवरिश की। पूरी बरात की बरात जीवन भर ढोनी है। तो चिन्ता तो रहेगी। ज्ञान का हर प्वाइंट क्लीयर नहीं था। बुद्धिमानों को उनकी बुद्धि की ख़ुराक नहीं मिलती थी। इसलिए बहुत से बच्चे टूटते रहे। स्वयं प्रजापिता राम वाली सोल भी टूट पड़ी क्योंकि बुद्धिमान बाप के बुद्धिमान बच्चों को बुद्धि का भोजन चाहिए। तो इतने बड़े ब्राह्मण परिवार को ज्ञान की गहराईयों का अमृत कलष न मिलने पर भी उनकी लंबे समय तक पालना करना, ये बड़ी जड़ का ही काम था। वो है बड़ा मूला। और जितने भी भूत-प्रेत हैं, मुख्य-मुख्य भूत-प्रेतों का नाम क्या है? अरे? जो मुख्य भूत-प्रेत हैं उनका नाम मालूम है ना। अरे? नहीं मालूम? काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। इन भूतों का बाप कौन है? देह अभिमान। ये देह अभिमान इस मनुष्य सृष्टि की मूल जड़ है। ये जड़ खलास हो जाती है, तो नई सृष्टि का फाउन्डेशन लग जाता है। अभी ये जड़ बकाया है या नहीं है? अभी भी बकाया है। स्थूल शरीर नहीं रहा। मैं गीता का भगवान साकार में। वो साकारी रूप नहीं रहा। तो भी सूक्ष्म शरीर से अभी इस दुनिया में काम कर रहा है। वो बुद्धि रूपी धरणी से वो बात मिटती नहीं कि मैं ही गीता का भगवान हूँ। इस समूची सृष्टि का बड़े ते बड़ा संचालनकर्ता मैं हूँ। ये देह अभिमान जब तक पूरा खलास नहीं होगा तब तक देवताई सृष्टि का फाउन्डेशन नहीं लगेगा।...

Brahma Baba also used to worry a lot about the sustenance of the *gyan yagya* (*yagya* of knowledge). He sustained the children of the *gyan yagya*. He had to carry the burden of the entire marriage party life-long. So, he will certainly be worried. Every *point* of the knowledge was not *clear*. The intelligent ones did not used to get food for their intellect. This is why many children continued to break away [from the knowledge]. Prajapita, the soul of Ram himself also

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

broke away because the intelligent children of the intelligent Father require food for the intellect. So, taking care of such a big Brahmin family for such a long time despite not getting the pot of nectar of deep knowledge was the task of only the big root. That is the *baraa muulaa* (the big root). And among all the ghosts and spirits, what is the name of the main ghosts and spirits? *Arey*? You know the names of the main ghosts and spirits, don't you? *Arey*? Don't you know? Lust, anger, greed, attachment, ego. Who is the father of these ghosts? Body consciousness. This body consciousness is the main root of this human world. When this root perishes, then the *foundation* for the new world is laid. Is this root still surviving or not? It is still surviving. The physical body did not survive. I am God of the Gita in the corporeal form. That corporeal form did not survive. Yet, it is working in this world through a subtle body now. The topic does not vanish from the earth like intellect: I Myself am the God of Gita. I am the biggest controller of the entire world. Unless this body consciousness is destroyed completely, the *foundation* of a deity world will not be laid. ... (to be continued.)

Extracts-Part-2

...बाहर की दुनिया में भी बड़ामूला ट्रायंगल है। ब्राह्मणों की दुनिया में भी बड़ामूला ट्रायंगल है। ये भूत-प्रेतों का राज्य है और इतना शक्तिशाली है कि आज के बड़े-बड़े वैज्ञानिक उस बड़ामूला ट्रायंगल के आस-पास जाने में घबराते हैं। उसके रहस्य को जानते नहीं हैं। उसकी ताक़त को समझते नहीं हैं। ये देहअभिमान की कितनी ताक़त है। पांच विकारों का बाप कौन है? देह अभिमान। ये देह अभिमान नष्ट होगा तो बड़ामूला ट्रायंगल का अस्तित्व नष्ट हो जाएगा। दुनिया से भूत-प्रेतों का राज्य मिट जाएगा। अभी तो अच्छे-अच्छे पुरुषार्थी, अच्छे से अच्छा पुरुषार्थ करने वाले, उनको भी माया पकड़ लेती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के भूत प्रवेश कर जाते हैं। बुद्धि को पूरा ही पलटाय देते हैं। अभी धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है। एक टाइम ऐसा भी आने वाला है कि जो असली विज्ञान है वो असली वैज्ञानिक उस बड़ामूला ट्रायंगल के ऊपर जीत पा लेंगे। वहां जानवर बुद्धियों का राज है। भगवान की सवारी कौनसे जानवर पर दिखाई जाती है? बैल के ऊपर दिखाई जाती है। ये जानवरों का राज्य अब खलास होने वाला है या तो बैल पूरे कंट्रोल में आने वाला है।

...There is a *Badaamuulaa* Triangle in the outside world as well as in the world of Brahmins. This is a kingdom of ghosts and spirits. And it is so powerful that the big scientists of today fear to go near that *Badaamuulaa* Triangle. They do not know its secret. They do not understand its power. This body consciousness is so powerful! Who is the father of the five vices? Body consciousness. When this body consciousness is destroyed, then the existence of the *Badaamuulaa* triangle will end. The rule of ghosts and spirits will end from the world. Now the nice *purusharthis*, those who make the best *purusharth* are also caught by Maya. The ghosts of lust, anger, greed, attachment, and ego enter [them]. They turn the intellect completely. Now the transformation is taking place gradually. Such a *time* is also going to come when the true science, the true scientists will gain victory over that *Badaamuulaa* Triangle. There is a rule of those with an animal like intellect there. God is shown to be riding which animal? He is shown on a bull. This rule of animals is going to end now, or the bull is going to be come under *control* completely.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

अभी उल्टा है। क्या? अभी जानवर मनुष्यों के ऊपर सवार होते हैं। शंकर के ऊपर किसकी सवारी होती है? अधूरे चन्द्रमाँ की। कंट्रोल कर लेता है। थू-थू-थैया होती रहती है। अभी जल्दी शंकर की सवारी बैल पर होने वाली है। तो बड़ामूला ट्रायंगल का अस्तित्व क्या होगा? खलास हो जावेगा। वो दुनियावी वैज्ञानिकों ने बड़ामूला ट्रायंगल के ऊपर जीत नहीं पाई। ये ब्राह्मणों की दुनिया बड़ामूला ट्रायंगल के ऊपर जीत पावेगी। अभी ब्राह्मणों की दुनिया में भी दो प्रकार की दुनियायें हैं। एक भूत-प्रेतों की दुनिया भी है जो बाहुबल का उपयोग करती रहती है। धनबल का उपयोग करती रहती है। दुनियावी बुद्धि का, बुद्धिबल का उपयोग करती रहती है। अभी वो सब शान्त होने वाले हैं। अभी बाप और बाप के बच्चे गुप्त पुरुषार्थी के रूप में गुप्त पुरुषार्थ कर रहे हैं। पुरुषार्थ अधूरा है। संपन्न स्टेज को पाया हुआ नहीं है। इसलिए जो सिद्धि होनी चाहिए वो सिद्धि दिखाई नहीं पड़ती।

Now it is the opposite. What? Now animals ride on human beings. Who rides on Shankar? The incomplete Moon. He controls [him]. People keep jeering at [him]. Now soon Shankar is going to ride on the bull. So, what will happen to the existence of the *Badaamuulaa* Triangle? It will perish. Those worldly scientists did not gain victory over the *Badaamuulaa* Triangle. This world of Brahmins will gain victory over the *Badaamuulaa* Triangle. Now the world of Brahmins is of two kinds. There is a world of ghosts and spirits as well which keeps using the physical power. It keeps using the power of wealth. It keeps using the worldly intellect, the power of the intellect. Now all of them are going to become calm. Now the Father and the Father's children are making secret *purusharth* in the form of hidden *purusharthis*[2]. The *purusharth* is incomplete. I has not reached the perfect *stage*. This is why the success that they should achieve is not visible.

अभी बीजरूप आत्माएं बीजरूप स्टेज में टिकने का पूरा पुरुषार्थ नहीं करती हैं। आवाज़ है चारों ओर - दुनिया का विनाश होने वाला है। लेकिन अपने-अपने सर के ऊपर डंडा नहीं पड़ रहा है। जब विनाश का डंडा अपने-अपने सर के ऊपर पड़ने लगेगा तो सब पुरुषार्थ में चौकन्ने हो जाएंगे और भूत-प्रेतों की दुनिया खलास होने लगेगी। परन्तु खलास होने से पहले वो भूत-प्रेत आत्माएं अपनी पूरी ताक़त आजमाएंगी। उनकी संख्या बहुत होने वाली है। जितने ढ़ेर के ढ़ेर अकाले मौत में मरते हैं, वो सब भूत प्रेत बनते हैं। और भूकम्प आवेंगे, बॉम्ब फटेंगे, जगह-जगह बॉम्ब फटेंगे, जगह-जगह भूकम्प आते रहेंगे। बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें, मल्टीस्टोरीज, जहाँ दुनिया के ज्यादा से ज्यादा लोग रहे पड़े हैं वो अचानक मरते रहेंगे तो भूत-प्रेत योनि में जायेंगे या 84 जन्म लेने वाले की योनि में जाएंगे? सब भूत-प्रेत बनेंगे। उनका उद्धार कैसे होगा? वो ज्ञानी तू आत्माएं हैं क्या? नहीं हैं। इसलिए एक-एक में अनेकों का प्रवेश होता रहेगा। कितना-कितना बुद्धि में बवंडर पैदा होगा। अभी-अभी बुद्धि एक बात फैसला करेगी, अभी-अभी दूसरी बात फैसला करेगी। एक फैसले पर वो भूत-प्रेत आत्माएं टिकने नहीं देंगी। इसलिए बाप कहते हैं कि ये देहअभिमान की लाठी त्यागो। इस ईश्वरीय कार्य में ये देह भी पूरा अर्पण करना पड़े।

[2] The ones who make spiritual effort.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Now the seed form souls do not make complete *purusharth* to become constant in the seed form stage. There is this news spread everywhere that the world is going to be destroyed. But the individuals are not experiencing pressure on themselves. When the individuals will start suffering the beatings of destruction on their head, then everyone will become alert in *purusharth*. And the world of ghosts and spirits will start to perish. But before perishing, those souls of ghosts and spirits will try with their full strength. Their number is going to increase a lot. All the numerous people who meet an untimely death become ghosts and spirits. And earthquakes will occur, bombs will explode, bombs will explode at different places, earthquakes will keep occurring at different places. The big buildings, the multistoried [buildings], where the greatest number of people of the world are living; when they die suddenly, will they be born in the species of ghosts and spirits or will they be born in the category of the ones who have the 84 births? All of them will become ghosts and spirits. How will they be uplifted? Are they knowledgeable souls? They aren't. That is why many souls will keep entering in each one. So much upheaval will take place in the intellect! Just now the intellect will take one decision and just now it will take another decision. Those souls of ghosts and spirits will not allow you to remain stable on one decision. This is why the Father says: Renounce this support of body consciousness. You have to surrender even this body completely in this task of God.

कितने निकलेंगे जो आत्मा बनेंगे? कितने? (जिज्ञासु - आठ।) आठ तो वो बनेंगे जो पास विद ऑनर होंगे। लेकिन आखरीन पूरे 84 जन्म लेने वाले, पक्के पुरुषार्थी जो आत्मिक स्थिति में स्थित हो जावेंगे... (किसीने कहा - साढ़े चार लाख।) साढ़े चार लाख में दूसरे धर्मों के बीज नहीं होंगे ? अरे, और-2 धर्मों के बीज होंगे या नहीं होंगे? वो भी तो होंगे। परन्तु सूर्यवंश के पक्के कितने होंगे? (जिज्ञासु - 50000) 50000 तो वो होंगे और 50000 वो चन्द्रवंशी होंगे जो अपने को सूर्यवंशियों के सामने सरेन्डर कर देंगे। कितने हो जावेंगे? एक लाख। वो है ही प्रवृत्तिमार्ग। ये वो श्रेष्ठ आत्माएं हैं जो आखरीन विजय पाने वाली हैं। अभी प्रभावित हो रही हैं। फिर प्रभावित होना बंद हो जावेगा। स्टेज ऐसी बन जावेगी एक बाप दूसरा न कोई। आया समझ में?

How many who become souls will emerge? How many? (Student: Eight.) Eight will be those who *pass with honour*. But ultimately, those who have the complete 84 births, the firm *purusharthis* who become constant in the soul conscious stage... (Someone said: 4½ lakh.) Will there not be the seeds of other religions among the 4½ lakh (450 thousand)? *Arey*, will there be the seeds of the other religions or not? They will also be present. But how many will there be who belong firmly to the Sun Dynasty? (Student: 50,000.) 50,000 will be those (*Suryavanshis*) and 50000 will be those *Candravanshis*, who will surrender themselves in front of the *Suryavanshis*. How many will they be in total? One lakh (100 thousand). That is indeed a path of household. These are those elevated souls, which will ultimately gain victory. They are becoming influenced now. Then they will stop becoming influenced. They will reach such a stage: One Father and no one else. Did you understand?

दूसरा जिज्ञासुः जब भूत-प्रेत प्रवेश होंगे एक आत्मा में तो पुरुषार्थ कैसे होगा?
बाबाः नहीं होगा। तब तो कहते हैं कि आत्मा बनो। आत्मिक स्थिति का पुरुषार्थ करो। सूक्ष्म शरीर वालों को प्रवेश करने का मौका ही नहीं मिलेगा अगर बिन्दु बनके रहेंगे। अपन को आत्मा स्टार समझेंगे, घड़ी-घड़ी देहभान की चक्करी में नहीं आवेंगे... अभी घड़ी-घड़ी क्रोध आता है ना।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

देह अहंकार आता है ना। घड़ी-घड़ी काम का आवेग आता है ना। न बूढ़ों को छोड़ता है, न नौजवानों को छोड़ता है। कामेषु-क्रोधेषु हो पड़ते हैं। इसलिए बाप कहते हैं अपन को आत्मा घड़ी-घड़ी समझो तो भूत-प्रेतों की प्रवेशता से बचे रहेंगे।

Another Student: How will we make *purusharth* when ghosts and spirits enter a single soul?
Baba: You will not be able to make [*purusharth*]. That is why it is said: Become a soul. Make the *purusharth* of [becoming stable in] the soul conscious stage. Those with a subtle body will not get any chance to enter [you] at all if you remain a point. If you consider yourself to be a soul, a *star*, if you do not become entangled in body consciousness again and again... now you become angry every moment, don't you? You get the ego of body, don't you? You get the impulse of lust every moment, don't you? It leaves neither the old nor the young. They become lustful, therefore wrathful. This is why the Father says: Consider yourself to be a soul every moment. Then you will be saved from the entrance of ghosts and spirits.

कुछ भी करो, खाओ, पीयो, घूमो-फिरो, धंधा-धोरी भी करो, लेकिन क्या प्रैक्टिस करो? मैं आत्मा ज्योतिबिन्दु। ये प्रैक्टिस पक्की जिसकी बनी रहेगी उसमें भूत-प्रेत आत्माएं प्रवेश नहीं कर सकेंगी। नहीं तो घड़ी-घड़ी देहभान आता है। मैं ऐसा कर दूंगा, मैं वैसा कर दूंगा। बाप कहते हैं, सब देहभान है। सारी दुनिया बंधन में है। बंधन वाला क्या कर देगा? यहाँ तो पुरुषार्थ भी बापदादा कराय रहे हैं। हम सेवा का पुरुषार्थ भी अपने आप नहीं कर रहे हैं। हम तो तमोप्रधान आत्मा हैं। तमोप्रधान आत्मा सेवा करेगी या डिससर्विस करेगी? डिससर्विस ही करते हैं। हमें अपना ही देहभान का ओना लगा रहता है। हाँ, जो हिम्मत करते हैं सेवा करने की तो बापदादा प्रवेश करके मदद करते हैं। सेवा पूरी हो जाती है। बाकी इन ज्ञान की बातों को जो नहीं समझते हैं, उन्हें अहंकार आता है कि हमने ये सेवा की। बस। माया पकड़ लेती है।

Do anything; eat, drink, move around, do your businesses as well, but what should you *practice*? I am a point of light soul. The souls of ghosts and spirits will not be able to enter the one who practices this firmly. Otherwise, they become body conscious again and again. [They say:] I will do this, I will do that. The Father says: All this is body consciousness. The entire world is in bondage. What can a person who is in bondage do? Here, even the *purusharth* is being enabled by Bapdada. We are not even making the *purusharth* of [doing] service on our own. We are *tamopradhan* souls. Will a *tamopradhan* soul do service or *diservice*? They do just *diservice*. We are concerned about our own body consciousness. Yes, the one who shows the courage to do service; Bapdada helps them by entering them. The service is accomplished. But those who do not understand these topics of knowledge become egotistic: We did this service. That is all. Maya catches them. ... (to be continued.)

Extracts-Part-3

समयः 31.49-33.58

जिज्ञासुः बाबा, रामवाली आत्मा ज्यादा दुःख लेती है, और लक्ष्मी की आत्मा ज्यादा दुःख नहीं लेती। इसका कारण क्या है?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबाः दुःख? रामायण पढ़ने वाले जो भक्त होते हैं, वो राम की जीवन कहानी जब सुनते हैं या दूसरों को सुनाते हैं... जैसे गुजरात में रामचन्द्र डोंगरे हुए थे, एक बड़े पण्डित, रामायण सुनाते थे तो घण्टे दो घण्टे रामायण सुनायेंगे तो घण्टे दो घण्टे रोयेंगे। और सुनने वालों को भी रुलाएंगे। तो भक्त रोते हैं या भगवान रोता है? जब दुःख होता है तो रोया जाता है या सुख होता है तो रोया जाता है? दुःख पड़ता है तो रोते हैं। तो राम वाली आत्मा रोने वाली है... माया का जब आक्रमण होता है, माया तहस-नहस करती है तो रामवाली आत्मा रोने वाली होगी या उसका पुरुषार्थ दिन दुना रात चौगुना बढ़ने वाला होगा? राम वाली आत्मा नहीं रोती है लेकिन भगत बिचारे कितना (रोते हैं): हाय राम की सीता चुरा ली गई। अब इसका अर्थ जानते नहीं हैं कि राम की सीता कैसे चुराई जाएगी। तो अज्ञानी दुःखी होता है। संगमयुग में राम की आत्मा ज्ञानी है या अज्ञानी है जो रोएगी, दुःखी होगी?

Time: 31.49-33.58
Student: Baba, the soul of Ram experiences more sorrow and the soul of Lakshmi does not experience more sorrow. What is its reason?
Baba: Sorrow? When the devotees, who read Ramayana, listen to the life story of Ram or when they narrate it to others; for example, there was Ramchandra Dongre, a great pundit in Gujarat. While narrating Ramayana, if he used to narrate Ramayana for an hour or two, he used to cry for an hour or two. And he used to make the listeners also to cry. So, do the devotees cry or does God cry? Does someone cry when there is sorrow or does someone cry when there is happiness? They cry when there is sorrow. So, does the soul of Ram cry...? When Maya attacks, when Maya causes destruction, will the soul of Ram cry or will his *purusharth* increase day in and day out? The soul of Ram does not cry, but the poor devotees cry so much: Alas! Ram's Sita was abducted☺. Well, they do not know its meaning that how can Ram's Sita be abducted? So, an ignorant person becomes sorrowful. Is the soul of Ram knowledgeable or ignorant that it will cry and experience pain in the Confluence Age?

समयः 34.05-36.54
जिज्ञासुः बाबा, जो खजुराहो है ना उसमें जो मूर्तियाँ बनी हैं, जो देवी-देवताओं की तो उसकी शूटिंग कहाँ पर हुई है?
बाबाः संगमयुग में।
जिज्ञासुः तो फिर उनकी पूजा क्यों नहीं होती है क्योंकि यहाँ संगम का जो भी यादगार...।
बाबाः क्योंकि हर काम का लक्ष्य देखा जाता है। भाव प्रधान विश्व रचि राखा। कोई काम किया जाता है तो उसमें भावना प्रधान होती है या कर्म प्रधान होता है? भावना प्रधान होती है। जो कर्म करने वाले हैं उनका लक्ष्य क्या है? गृहस्थियों की तरह साथ में रहते, विकारों के ऊपर जीत पाने का लक्ष्य है या सन्यासियों की तरह सफेद, काले और पीले कपड़े पहन करके दूरबाज-खुशबाज़ रहने का लक्ष्य है? क्या लक्ष्य होता है उनका? अरे उन खजुराहो की मूर्तियों का लक्ष्य क्या है? सूर्य मन्दिर की मूर्तियों का लक्ष्य क्या है? जगन्नाथ के मन्दिर की मूर्तियों का लक्ष्य क्या है? श्रेष्ठ लक्ष्य है या भ्रष्ठ लक्ष्य है? (किसीने कहा - श्रेष्ठ।) तो भावना ऊँची है, लक्ष्य ऊँचा है तो लक्षण भी कैसे आएंगे? श्रेष्ठ लक्षण आयेंगे।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 34.05-36.54
Student: Baba, where did the shooting for the idols of deities depicted in [the temple of] Khajuraho[3] take place?
Baba: In the Confluence Age.
Student: Then, why are they not worshipped? Because whatever happens in the Confluence Age...
Baba: It is because the goal is observed in every task. *Bhaav pradhaan vishwa raci raakhaa*[4]. In any task that is performed, is the feeling important or is the action important? The feeling is important. What is the aim of the person who is performing the action? Is their aim to gain victory over the vices while living together [with the partner] like householders or is their aim to be happy while living away from the household by wearing while, black and yellow clothes like the Sanyasis? What is their aim? *Arey*, what is the aim of those idols of Khajuraho? What is the aim of the idols of the Sun Temple? What is the aim of the idols of the temple of Jagannath? Do they have an elevated aim or an unrighteous aim? (Someone said: Elevated.) So, if the feeling is elevated, if the aim is elevated, then what kind of features will they develop? They will develop elevated features.

(किसीने कुछ कहा।) इसलिए पूजा हुई कि उन्होंने पवित्रता के लिए लक्ष्य धारण किया कि हम साथ में रह करके, पवित्र रह करके दिखाएंगे। कीचड़ में रहेंगे। जैसे शिव की इन्द्रियाँ पूजी जाती हैं। कौनसी इन्द्रिय पूजी जाती है? लिंग पूजा जाता है। क्यों पूजा जाता है? जलाधारी के साथ रहते हुए भी पवित्र रहा या पतित होता रहा, शक्ति क्षीण करता रहा? (किसीने कहा - पवित्र रहा।) पवित्र रहा। तो उसकी पूजा होती है। ऐसे तुम बच्चे भी हो। लाख शालिग्राम जो बनाते हैं वो शिव की पूजा के साथ उनकी भी पूजा होती है। उन्होंने भी ऐसी स्टेज बनाई है। इस रहस्य को ये साधु-सन्यासी नहीं समझते, जो सफेद, लाल, पीले कपड़े पहनने वाले हैं। दिखावा जास्ती करते हैं। ज्ञान की गहराईयों को नहीं पकड़ सकते।

(Someone said something.) They were worshipped because they set a goal for purity: We will set an example of being pure while living together. We will live in mire. For example, the *indirya*[5] of Shiva are worshipped. Which *indriya* is worshipped? The *ling*[6] is worshipped. Why is it worshipped? Despite being with the *jalaadhaari*[7], did he remain pure or did he keep becoming impure, did he keep on losing energy? (Someone said: He remained pure.) He remained pure. So, he is worshipped. Similar is the case with you children. The one lakh *shaligrams* that are prepared are also worshipped along with Shiva. They have also attained such a *stage*. The sages and *sanyasis*, who wear white, red, yellow clothes, do not understand this secret. They show-off more. They cannot grasp the depths of knowledge.

[3] A place in Madhya Pradesh, India.
[4] Your world is created according to the intentions with which you perform deeds.
[5] Parts of the body used to perform actions.
[6] The symbolic representation of the male organ; in the path of *bhakti* it represents the incorporeal form of Shiva.
[7] The base of *Shivling*, which is a symbolic representation of the female organ

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समयः 37.13-39.06

जिज्ञासुः बाबा, नेक्स्ट टू गॉड इज़ नारायण, नेक्स्ट टू गॉड इज़ कृष्ण, नेक्स्ट टू गॉड इज़ शंकर और नेक्स्ट टू गॉड इज़ प्रजापिता कहा जाता है। पर नेक्स्ट टू गॉड इज़ राम क्यों नहीं कहा जाता?

बाबाः राम 14 कला सम्पूर्ण है या राम 16 कला संपूर्ण है? क्या है? 14 कला है। तो संपूर्ण गाया जाना चाहिए या अपूर्ण गाया जाना चाहिए? नेक्स्ट टू गॉड कौन गाया जाना चाहिए? वो तो 1200 वर्ष जब बीत जाएंगे पुरुषार्थ के तब राम वाली आत्मा जो फेल होने वाली है फेलियर उसका गायन होगा। राम वाली आत्मा फेलियर है तो राम है। अगर पास हो जाती है तो नारायण है। तो नारायण का गायन होना चाहिए या राम का गायन होना चाहिए नेक्स्ट टू गॉड? नारायण का गायन होना चाहिए । इसलिए नेक्स्ट टू गॉड इज़ नारायण वो संपन्न पुरुषार्थ है। सम्पन्न पुरुषार्थी का नाम नर से नारायण है। राम को संपन्न पुरुषार्थी कहेंगे? नहीं कहेंगे। नारायण में शिव का प्रवेश होता है या राम वाली आत्मा में शिव का प्रवेश होता है? जो पतित है उसमें शिव का प्रवेश होता है या पावन में शिव का प्रवेश होता है? पतित में प्रवेश होता है।

Time: 37.13-39.06
Student: Baba, it is said that next to God is Narayan, next to God is Krishna, next to God is Shankar and next to God is Prajapita. But why isn't it said that next to God is Ram?
Baba: Is Ram perfect in 14 celestial degrees or is Ram perfect in 16 celestial degrees? What is he? He is perfect in 14 celestial degrees. So, should the perfect one be praised or should the incomplete one be praised? Who should be praised as *next to God*? When 1200 years of making *purusharth* pass, then the soul of Ram, which is going to *fail* and is a *failure*, will be praised. When the soul of Ram is *failure*, it is Ram. If he passes, it is Narayan. So, should Narayan be praised or should Ram be praised as being *next to God*? Narayan should be praised. This is why *next to God is Narayan*, that is the complete *purusharth*. The name of the complete *purusharthi* is Narayan [who becomes Narayan] from a man. Will Ram be said to be a complete *purusharthi*? He will not be said to be so. Does Shiva enter Narayan or does Shiva enter the soul of Ram? Does Shiva enter the sinful one or the pure one? He enters the sinful one.

समयः 39.11-40.55

जिज्ञासुः बाबा, जो मिनिमधुबन बनेंगे, इनकी काउंटिंग कितनी होगी 2036 तक?

बाबाः बाबा ने तो गीता पाठशाला वालों को भी बोला है गीता पाठशाला का नक्शा ऐसा बनाओ, मधुबन जैसा नक्शा बनाओ। क्या? गीता पाठशालाएं भी क्या बन जाएं? मधुबन बन जाएं। जहाँ-जहाँ मधुबन बनावेंगे वहीं-2 बापदादा आवेंगे। इसका मतलब क्या हुआ? इसका मतलब ये हुआ जो भी गीता पाठशालाएं हैं उनमें ढ़ेर की ढ़ेर ऐसी होंगी संसार में प्रसिद्ध होने वाली, जो मधुबन के रूप में विख्यात हो जावेंगी। तुम्हारे लाखों की तादाद में सेन्टर्स हो जावेंगे। लाखों, करोड़ों की तादाद में मुरलियाँ छपने लग पड़ेंगी। अभी लाखों की तादाद में बेसिक में सेन्टर हैं? नहीं हैं। जो हैं उनमें से भी पुराने-पुराने ढ़ेर के ढ़ेर अच्छे-अच्छे जिज्ञासु ज्ञानी तू आत्माएं टूटते जा रहे हैं

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

क्योंकि ज्ञान उड़ता जा रहा है। जो प्योरिटी की गहरी धारणा है वो उड़ चुकी है। सन्यासियों की धारणा पकड़ ली है।

Time: 39.11-40.55
Student: Baba, the *minimadhubans* that are established; what will be their counting (number) by 2036?
Baba: Baba has told those running the *gitapathshalas* also: Prepare the map of a *gitapathshala* like that of *Madhuban*. What? What should the *gitapathshalas* also become? They should become *Madhuban*. Wherever you establish a *Madhuban*, Bapdada will come. What does it mean? It means that among all the *gitapathshalas* that exist, there will be numerous *gitapathshalas* which will become famous in the world as *Madhuban*. Your centers will grow to lakhs (hundred thousand) in number. Murlis will begin to be printed in the number of lakhs and crores. Are there lakhs of centers in the basic [knowledge] now? There aren't. Even among those that exist, numerous old nice students, knowledgeable souls are breaking away because the knowledge is vanishing. The deep assimilation of purity has vanished. They have adopted the assimilation [of purity] of the *sanyasis*. ... (to be continued.)

Extracts-Part-4

समयः 41.22-44.05

जिज्ञासुः 108 का संगठन बाबा अहमदाबाद में बोला है नारायण का। तो वो अहमदाबाद में बनेगा?

बाबाः ऐसा तो नहीं कहा कि 108 का संगठन अहमदाबाद में ही दिखाई देगा, माउंट आबू में नहीं दिखाई देगा। तुम बच्चे सृष्टि पर परमधाम उतार लेंगे। तो परमधाम में पहले-पहले बीज रूप 108 आत्मायें पहुँचेंगी या दूसरी पहुँच जाएंगी? पहले तो 108 पहुँचेंगी। बाकी जिनको कंट्रोल करने की महत्वाकांक्षा रहती है कि हमें इस जीवन में ये महत्वाकांक्षा मिल जाए जैसे धृतराष्ट्र को महत्वाकांक्षा थी। क्या? राज्य मिल जाए। कंट्रोलिंग पावर हमारे हाथ में आ जाए। जैसे यज्ञ के आदि में ब्रह्मा और ब्रह्मा के सहयोगियों को महत्वाकांक्षा थी - यज्ञ की कंट्रोलिंग पावर किसके हाथ में आ जाए? हमारे हाथ में आ जाए। तो सन् 47 में आ गई थी। मिला क्या? रामराज्य मिला या और ही रावण राज्य मिल गया? और ही रावण राज्य मिल गया। अभी बाप ने हमको क्या शिक्षा दी है? दूसरों के ऊपर राजाई करने की शिक्षा दी है या इच्छा मात्रम अविद्या बनने की शिक्षा दी है? इच्छा मात्रम अविद्या।

Time: 41.22-44.05
Student: Baba, it has been said that there is a gathering of 108 [souls] of Narayan in Ahmedabad. So, will that be formed in Ahmedabad?
Baba: It has not been said that the gathering of 108 will be visible only in Ahmedabad and that it will not be visible in Mount Abu. You children will bring the Supreme Abode to this world. So, will the seed form 108 souls reach the Supreme Abode first of all or will others reach [first]? First the 108 [souls] will reach. As regards those who have the ambition to control, [who think:] We should achieve this ambition in this life just as Dhritrashtra had an ambition. What? I should get the kingdom. The *controlling power* should come in my hands. For example, Brahma and

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

the helpers of Brahma had the ambition in the beginning of the *yagya*. [They thought:] In whose hands should the *controlling power* of the *yagya* come? It should come in our hands. So, it came in his hands in the year 47. What did he get? Did he get the kingdom of Ram or did he get the kingdom of Ravan even more? He got the kingdom of Ravan even more. What is the teaching that the Father has given us now? Has he given us the teaching to rule over others or has he given us the teaching to become *ichchaa maatram avidyaa*[8] ? *Ichchaa maatram avidyaa*.

ब्राह्मणों की राजाई होती है? (जिज्ञासु - नहीं।) ब्राह्मणों की तो राजाई ही नहीं होती। परन्तु कोई-कोई ब्राह्मण हैं जो समझ बैठे हैं कि ब्रह्मा बाबा हमको राजाई दे करके चले गए। अब कंट्रोलिंग पावर हमारे हाथ में है। चाहे उल्टे चलें या सीधे चलें। चाहे बाहुबल का आधार लें, चाहें न लें। लेकिन राजाई हमारे हाथ में आ गई दुनिया की। तो क्या ये सच्ची बात है या झूठी बात है? (जिज्ञासुओं ने कहा - झूठी बात है।)

Is there any kingship of the Brahmins? (Student: No.) The Brahmins don't have kingship at all. But some Brahmins are under the impression that Brahma Baba gave them the kingship and departed. Now the *controlling power* is in their hands whether they act in an opposite or a correct way, whether they take the support of physical power or not, but the kingship of the world has come into their hands. So, is it true or false? (Students: It is false.)

समयः 44.25-51.31

जिज्ञासुः शास्त्रों में दिखाया है कि कृष्ण के पैर में बहेलिये ने तीर मारा तो कृष्ण के प्राण पखेरू उड़ गये?

बाबाः कोई छोटा बच्चा है। प्रश्न कर रहा है कि शास्त्रों में बात आई है कि कृष्ण के पांव में किसी बहेलिये ने तीर मारा और घाव हो गया और उस घाव से वो मर गए। तो तीर स्थूल तीर था या कोई ज्ञान का बाण था? ज्ञान का बाण था। और पांव कोई स्थूल पांव था या बुद्धि रूपी पांव में चोट लगी? (जिज्ञासुओं ने कहा - बुद्धि रूपी पांव में।) और बहेलिया कोई दुनिया का जानवर मारने वाला बहेलिया था या ज्ञान में चलने वाला कोई ब्राह्मणों के बीच में बहेलिया था? (जिज्ञासुओं ने कहा - ज्ञान में चलने वाला...) और कृष्ण वो शास्त्रों में जिस कृष्ण की बात आई हुई है, जिसको गीता का भगवान बनाय दिया है वो कृष्ण था या कोई आत्मिक रूप में पार्ट बजाने वाली आत्मा थी? कौनसी आत्मा थी? कोई आत्मा थी।

Time: 44.25-51.31

Student: It has been shown in the scriptures that a hunter shot an arrow at Krishna's foot and Krishna died.

Baba: There is small child who is asking that it has been mentioned in the scriptures that a hunter shot an arrow at Krishna's foot, he was injured and he died due to that injury. So, was it a physical arrow or an arrow of knowledge? It was an arrow of knowledge. And was it a physical leg or was his leg like intellect injured? (Students: The leg like intellect.) And was the hunter a worldly hunter who hunts animals or was he a hunter amidst some Brahmins who follow the path of knowledge? (Students: The one who followed knowledge...) And as regards Krishna,

[8] without a trace of the knowledge of desires

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

who has been mentioned in the scriptures, who has been made God of the Gita, was he that Krishna or was it a soul which plays a part in the form of a soul? Which soul was it? It was some soul.

वो आत्मा पुरुषार्थ करने वाली थी कि बुद्धि रूपी पांव में बहेलिये ने तीर मारा और प्राण पखेरू उड़ गये जो बाबा मुरली में बोलते हैं। क्या? क्या बोलते हैं? ठिक्कर में भगवान समझ लेते हैं। जैसे मिट्टी का ढेला होता है ना। उसमें एक ठोकर लगे पांव की तो बिखर जाता है। ऐसे ज्ञान में चलने वाले मिट्टी के ढेले बहुत हैं, जिनका अपना मनन-चिंतन-मंथन कुछ भी नहीं होता इसलिए माया की एक ठोकर लगती है और बुद्धि बिखर जाती है। ऐसे ही बेसिक ब्राह्मणों की दुनिया में कृष्ण की आत्मा कौन थी? कौन थी जो किसी बहेलिये ने बात का एक ऐसा बाण मारा जो उनकी बुद्धि बिखर गई, सहन नहीं कर सके, हार्ट फेल हो गया? उनके शरीर छोड़ने के बाद जो पहली बुलेटिन निकली उसमें ये बात क्लीयर कर दी गई है कि ब्रह्मा बाबा के हार्ट में दर्द हुआ रात का क्लास करने के बाद और जब तक डॉक्टर आया तब तक प्राण पखेरू उड़ गए। उस से दो दिन पहले एक हादसा हुआ था। सारे ब्रह्माकुमारी ईश्वरिय विश्वविद्यालय का रजिस्ट्रेशन बाबा की जानकारी के बगैर करा लिया गया। उसका नाम रखा गया वर्ल्ड रिन्युअल ट्रस्ट। जो बाबा के अंतरंग सहयोगी थे उनका नाम नहीं डाला गया उस संगठन में। जो चोरी छिपे, बाबा से छिप करके काम करने वाले थे, उन लोगों का नाम डाला गया।

That soul was making *purusharth* when a hunter shot an arrow at his leg like intellect and he lost his life, which is mentioned in the murli by Baba. What? What does He say? People consider God to be present in *thikkar* (a block of mud). For example, there is a block of mud, isn't there? If you kick it with your leg once, it scatters. Similarly, there are many blocks of mud among those who follow the path of knowledge, who do not think or churn the knowledge themselves; this is why as soon as Maya hits them with her leg once and the intellect scatters. Similarly, who was the soul of Krishna in the world of the basic Brahmins? Who was the person whom a hunter shot such an arrow of some words that his intellect scattered, he could not tolerate it and he met with a heart failure? After he left his body, in the first bulletin that was issued, it was clarified that Brahma Baba felt a pain in his *heart* after the night class and before the doctor could arrive, he lost his life. A tragedy had occurred two days earlier. The entire Brahmakumari Ishwariya Vidyalaya was got registered without Baba's information. It was named 'The World Renewal Trust'. The names of the close helpers of Baba were not included in that group. Those who used to perform tasks stealthily, without the knowledge of Baba were included in that group.

आज उस वर्ल्ड रिन्युअल ट्रस्ट के हाथ में उन बेसिक ब्राह्मणों की सारी बिल्डिंगें और सारी प्रापर्टी एक मुट्ठी में समाई हुई है। जैसे आज दुनिया का सारा आर्थिक ढांचा कौनसे महादेश के हाथ में है? (जिज्ञासु - अमेरिका।) अमेरिका के हाथ में है। वो अमेरिका दुनिया के हिसाब से बड़े-बड़े धनाढ्यों की नगरी है। धनाढ्यों का देश है। यादवों का देश है। ऐसे ही दक्षिण भारत में... दक्षिण भारत की राजधानी बम्बई, वो माया की नगरी है। उस माया की नगरी में भी कोई ऐसे निकलते हैं जो ऐसी तीखी बातें कर देते हैं, तीखा-तीखा काम कर देते हैं, उल्टा-पल्टा जो ब्रह्मा बाबा सहन नहीं कर सके। बुद्धि-रूपी पांव में थोड़ी सी बात का झटका लगा और प्राण पखेरू उड़

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

गये। हार्ट फेल हो गया। ये महत्वाकांक्षा की बातें हैं। भस्म होने वाली दुनिया की महत्वाकांक्षा है या आने वाली नई दुनिया की महत्वाकांक्षा है? भस्म होने वाली दुनिया के ऊपर हमारी कंट्रोलिंग बनी रहे। कितनी घातक महत्वाकांक्षा है। ये ब्राह्मणों का कर्म है या दुनियावी शूद्रों का कर्म है? (किसीने कहा - शूद्रों का।)

Today all the buildings and the entire property of those basic Brahmins is in the hands of that World Renewal Trust. For example, which super power controls the entire economic framework of the entire world today? (Student: America.) It is in the hands of America. That America is a country of big prosperous people from the worldly point of view. It is a country of rich people. It is a country of the Yadavas. Similarly, the capital of south India, i.e. Bombay is a city of Maya. Even in that city of Maya, some people emerge who utter such sharp words, perform such sharp and wrong tasks that Brahma Baba could not tolerate. As soon as his leg like intellect was shaken by some words and he lost his life. He had a heart failure. It is about ambition. Is it an ambition of the world that is going to be burnt to ashes or is it an ambition of the forthcoming new world? [They think:] I should continue to control the world that is going to be burnt to ashes. It is such a dangerous ambition. Is this an act of the Brahmins or is it an act of the worldly Shudras[9]? (Someone said: Of the Shudras.)

समयः 51.39-54.46

जिज्ञासुः बाबा, याद में झुटका और नींद आती है। तो क्या करें?

बाबाः बाबा ने तो बोला है कि दुनिया में जो हम पाप कर्म करते रहे 63 जन्म उन पाप कर्मों का एक गुना बोझा चढ़ता रहा। और अभी भगवान बाप मिल गया, ब्राह्मण बन गए, दुनिया को हम ये दिखाने लगे कि हमें भगवान बाप मिला है और फिर अगर कोई गल्तियाँ करते हैं श्रीमत के बरखिलाफ तो कितना गुना बोझा चढ़ता है? सौ गुना बोझा चढ़ जाता है। तो कहाँ एक गुना बोझा, उस समय तो हमें श्रीमत का पता ही नहीं था, अनजाने में भूलें करते थे। और अभी? अभी तो जानबूझ करके भूलें कर बैठते हैं। एक-एक भूल का सौगुना बोझा चढ़ रहा है। तो आत्मा दब रही है या सुजाग हो रही है? (जिज्ञासु - दब रही है।) दब रही है। जब मुरली सुनाई जाती है तो झुटके आते हैं। जब बाबा की याद में बैठाया जाता है संगठन में तो झुटके आते हैं। दोनों तरीके से हमारा पाप कर्म और बढ़ता जा रहा है या घटता जा रहा है? (जिज्ञासुः बढ़ रहा है।) संगठन में रह करके हमको अलर्ट रहना चाहिए ताकि दूसरों का वायब्रेशन खराब करने के हम निमित्त न बन पड़ें। हमारे संग का रंग, हमारा वायब्रेशन दूसरों को न लग जाए। तो संगठन में बैठ करके अगर हम नींद लेते हैं, झुटका खाते हैं, तो पाप करते हैं या पुण्य कमाते हैं? कितना गुणा बोझा चढ़ता है? सौगुना बोझा चढ़ता है। आपेही तरस परोई। कोई-कोई ऐसे भी तो पुरुषार्थी होंगे जो संगठन में बैठ करके ऐसी भारी भूल नहीं करते होंगे। देखने में आते हैं या नहीं आते हैं? आते हैं। तो ऐसे अच्छे-अच्छे पुरुषार्थियों को फालो करना चाहिए। वो ऐसे क्या कर्म करते हैं जो उनकी आत्मा इतनी दबी हुई नहीं रहती है?

[9] Members of the fourth and the lowest category of the Hindu-Aryan society.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 51.39-54.46
Student: Baba, we feel sleepy during remembrance. What should we do?
Baba: Baba has said that as regards the sinful actions that we committed in the world during 63 births, we accumulated one fold sin for those sinful actions. And now, when we have found God the Father, when we have become Brahmins, when we have started showing the world, 'We have found God the Father' and then if we perform any mistake in violation of *Shrimat*, then how much burden do we accumulate? We accumulate hundred fold burden. So, what a difference there is when compared to one fold sin! We did not know about *Shrimat* at that time at all. We used to make mistakes ignorantly. And what about now? Now we commit mistakes deliberately. We are accumulating hundred fold burden for each sin. So, is the soul becoming subdued or is it becoming awakened? (Student: It is becoming subdued.) *Hm*? It is becoming subdued. When the murli is narrated, we doze off. When they are made to sit in Baba's remembrance in a gathering, we doze off☺. In both ways are we accumulating sinful actions or are they decreasing? (Student: It is increasing.) While we are in a gathering we should remain *alert* so that we do not become instruments in spoiling the vibrations of others. Others should not be affected by the colour of our company, our vibrations. So, if we sleep, if we doze off while sitting in a gathering, do we commit sins (*paap*) or do we accumulate merits? How much burden do we accumulate? We accumulate hundred times burden. You alone please have mercy on us☺. There will also be some *purusharthis* like this, who do not commit such a grave mistake while sitting in a gathering. Are they visible or not? They are. So, you should follow such nice *purusharthis*. [We should observe:] What actions do they perform that their soul is not so subdued? ... (to be continued.)

Extracts-Part-5

समयः 55.04-57.17

बाबाः एक प्रश्न आया है। कामदेव कहा जाता है भक्तिमार्ग में। क्या? देव। ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार - ये देव हैं या राक्षस हैं? भूत-प्रेत हैं? क्या हैं? भूत-प्रेत हैं, राक्षस हैं। फिर इन्होंने ऐसा क्या काम किया काम देव ने जो इनको देवता की लिस्ट में डाल दिया गया? कामदेव के रूप में इनका नाम बखान होता है। अच्छा? नहीं याद आ रहा? (किसी ने कुछ कहा।) हाँ। पाण्डवों के साथ कोई कामी कुत्ता भी गया था या नहीं गया था? (किसी ने कहा - गया था।) गया था। उसने कुछ पुरुषार्थ किया होगा, तब साथ गया था या ऐसे ही चला गया? जरुर उसने काम पर जीत पाने का पुरुषार्थ किया है इसलिए गया। तो शास्त्रों में बात आई है कि ऐसे नहीं है - काम अर्थात् कामना सतयुगी नई दुनिया में नहीं होगी। होगी, लेकिन दैहिक रूप में, दैहिक इन्द्रियों का सुख भोगने की कामना नहीं होगी। इसलिए बोला कामदेव तो होगा लेकिन हुइये कामोअनंग। काम की मार मारने वाला वो अंग वहां नहीं होगा। इसलिए उसका नाम अनंग देव कहा जाता है। है तो वही आत्मा।

Time: 55.04-57.17
Baba: A question has been asked: It is said *Kaam**dev*** (deity of desire) in the path of *bhakti*. What? *Dev* (deity). This lust, anger, greed, attachment, ego, are they deities or demons? [Or] are they ghosts and spirits? What are they? They are ghosts and spirits, demons. Then what did *Kaamdev* do that he was put in the *list* of deities? He is described as *Kaamdev*. *Achcha*? Are you not able to recollect? (Someone said something.) Yes. Did any lustful dog also go with the

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Pandavas or not? (Student: It went.) It went. Did he go with them as he made some *purusharth* or did he simply go? He has definitely made some *purusharth* to gain victory over lust; this is why he went. It has been mentioned in the scriptures that it is not that *kaam*, i.e. desire will not exist in the Golden Age new world. It will exist, but it will not be present in a physical form; there will not be a desire to experience the pleasure of bodily *indriya*[10]. This is why it has been said that *Kaamdev* will exist, but it will be bodiless. The organ that launches the attack of lust will not exist there. This is why he is called *Anang Dev* (a bodiless deity). It is the same soul.

समयः 57.24-01.00.42

जिज्ञासुः बाबा, जब विनाश होगा तो सब आत्माएं परमधाम जाएंगी। लेकिन ये पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, इनकी आत्मा कहाँ जाएंगी?

बाबाः जो भी आत्माएं होती हैं उन आत्माओं की श्रेणियाँ होती हैं कि सब एक जैसी आत्माएं होती हैं? जो भी बीज होते हैं दुनिया में उन बीजों की अलग-अलग जातियाँ होती हैं या एक ही तरह के बीज होते हैं?

जिज्ञासुः बाबा कहते हैं मैं सबका बाप हूँ, सबको ले जाऊंगा।

बाबाः जो बात बोली जा रही है उसका जवाब दो कि जो भी दुनिया में बीज होते हैं उनकी अलग-अलग जातियाँ होती हैं या एक जैसे ही बीज होते हैं? (जिज्ञासु - अलग-अलग जातियाँ होती हैं।) ऐसे ही आत्माओं की भी अलग-अलग जातियाँ हैं। मनुष्य जात ऐसा बीज है जो मनन-चिंतन-मंथन करने वाला है। मन का उपयोग करने वाला है। मननात् मनुष्य कहा जाता है। मनुष्य होकर अगर मन का उपयोग नहीं करता, मनन-चिंतन-मंथन नहीं करता, और वो भी भगवान के महावाक्यों का, मुरली के महावाक्यों का मनन-चिंतन-मंथन नहीं करता, ज्ञान सागर की गहराई में नहीं जाता, तो वो ब्राह्मण जानवर है या मनुष्य है? जानवर तुल्य हो गया।

Time: 57.24-01.00.42

Student: Baba, when destruction takes place, all the souls will go to the Supreme Abode. But where will the souls of these animals, birds, and living beings go?

Baba: Are there categories of all the souls or are all the souls alike? Are there different varieties of seeds in the world or are all the seeds of the same kind?

Student: Baba says: I am everybody's Father; I will take everyone with Me.

Baba: Reply to what is being asked that whether there are different varieties of seeds in the world or are all the seeds alike? (Student: There are different varieties.) Similarly, there are different species of souls as well. The human species is such a species that thinks and churns. He uses his mind. It is said '*Mananaat manushya'* (the one who thinks is called a human being). If someone does not use his mind, does not think and churn and that too about the great versions of God, the versions of the murlis, and does not go into the depth of the Ocean of knowledge despite being a human being, then is that Brahmin an animal or a human being? He became equal to an animal.

[10] Parts of the body used to perform actions.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

ऐसे जानवर बुद्धि आत्माएं परमधाम में ऊपर-ऊपर की ओर रहेंगी या नीचे की स्टेज में रहेंगी? (जिज्ञासुओं ने कहा - नीचे की स्टेज में।) ऐसे ही जो प्रैक्टिकल में जानवर हैं, शरीर से मनुष्य नहीं हैं, शरीर भी जानवर का है, वो उन मानवीय जानवरों से ऊँचे हुए या नीचे हुए? नीचे हुए। तो उनकी आत्मायें परमधाम में उनसे भी नीचे रहेंगी या उनके बराबर या ऊँची रहेंगी? उनसे भी नीची जाएंगी। तो जानवरों, कीटों, पशुओं, पक्षियों, यहाँ तक कि ये जो पेड़-पौधे हैं, एक जगह पे स्थिर रहते हैं, स्थिर हो करके हलन-चलन करते हैं, उनमें भी आत्मा है। लेकिन जड़त्वमयी आत्मा है। वो आत्माएं परमधाम में सबसे नीचे की स्तर में रहेंगी। आत्मा हो, चाहे जड़त्वमयी बुद्धि वाली हो और चाहे चैतन्यमयी बुद्धि वाली हो, परमधाम में तो सबको वापस जाना है।

Will such souls with an animal like intellect remain upwards in the Supreme Abode or will they live in a lower stage? (Students: In a lower stage.) Similarly, those who are animals in practice, those who are not human beings physically, those whose bodies are also that of animals, are they higher than the animal like human beings or lower than them? They are lower. So, will their souls remain at a lower level than even them in the Supreme Abode or will they be equal to them or higher than them? They will be lower than even them. So, there are souls in animals, insects, animals, birds and even in these trees and plants which remain constant at one place and which move while remaining at one place. But they have an inert soul. Those souls will remain in the lowest stage in the Supreme Abode. All the souls, whether they have an inert intellect or a living intellect, have to return to the Supreme Abode.

समयः 01.00.48-01.02.28

जिज्ञासुः बाबा, साकार में निराकार को याद करते हैं ना हम इसमें मन और बुद्धि जब सक्रिय होती हैं तो तो उस समय थोड़ा अहंकार बढ़ जाता है। इसका समाधान कैसे होगा?

बाबाः मंद बुद्धि कि मन-बुद्धि?

जिज्ञासुः मन-बुद्धि।

बाबाः मन-बुद्धि जब सक्रिय होती है...।

जिज्ञासुः अहंकार बढ़ जाता है बाबा।

बाबाः अहंकार बढ़ जाता है? (जिज्ञासु - हाँ।) क्यों? निराकार याद नहीं रहता होगा। जब निराकार याद नहीं रहेगा, सिर्फ साकार याद रहेगा तो अहंकार बढ़ेगा या नहीं बढ़ेगा? बढ़ेगा। साकार और निराकार के मेल में से अगर शिव को निकाल दिया तो साकार क्या रह जाता है? शिव रह जाता है या शव? (जिज्ञासुओं ने कहा - शव।) तो शव को याद करेंगे तो क्या होगा? चेक करो कि याद करते समय साकार में निराकार याद रहता है या भूल जाता है?

Time: 01.00.48-01.02.28

Student: Baba, when the mind and intellect becomes active in remembering the incorporeal One within the corporeal one, then the ego increase. How can this be resolved?

Baba: *Mand buddhi* (dull intellect) or *man-buddhi* (mind and intellect)?

Student: Mind and intellect.

Baba: When the mind and intellect becomes active...

Student: Baba, the ego increases.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: The ego increase? (Student: Yes.) Why? You will not remember the incorporeal One. When you don't remember the incorporeal One, when you remember only the corporeal one, will the ego increase or not? It will increase. If Shiva is removed from the combination of the corporeal one and the incorporeal one, then what does the corporeal one become? Does he remain Shiva or *shav* (corpse)? (Students: Corpse.) So, what will happen if you remember the corpse? Check [yourself]: While remembering (Baba) do you remember the incorporeal One within the corporeal one or do you forget Him?

समयः 01.02.34-01.06.23

जिज्ञासुः बाबा, लक्ष्मी-नारायण को समझदार भी बताया, बुद्धु भी बताया।

बाबाः बुद्धु भी बता दिया लक्ष्मी-नारायण को। लक्ष्मी-नारायण को समझदार भी बता दिया। बाबा दो-दो बातें कर देते हैं। हाँ, फिर प्रश्न क्या है?

जिज्ञासुः इसका कारण क्या है?

बाबाः इसका कारण क्या है? लक्ष्मी-नारायण को मुरली में बुद्धु भी बता दिया। एक मुरली में बताया लक्ष्मी-नारायण तो बुद्धु हैं। उनकी बुद्धि में ज्ञान होता ही नहीं। और एक मुरली में बताया लक्ष्मी-नारायण समझदार हैं, तब तो विश्व के मालिक हैं। तो ये लक्ष्मी-नारायण दो हैं, दो जोड़े अलग-अलग हैं या एक ही जोड़े की बात है? (जिज्ञासुओं ने कहा - दो जोड़े हैं।) दोनों जोड़े अलग-अलग हैं। जो समझदार हैं वो विश्व के मालिक बनते हैं इसी संगमयुग में। सारे विश्व को कंट्रोल करने वाले बनते हैं। क्योंकि समझदार हैं। बाबा की वाणी को समझने की उनमें समझ है। और जो लक्ष्मी-नारायण बुद्धु हैं वो कौन हैं? सतयुग के लक्ष्मी-नारायण, वो कौनसी आत्मा बनेगी? (किसीने कहा - राधा-कृष्ण।) राधा-कृष्ण माने क्या? दादा लेखराज, ओम राधे मम्मा। जिन्होंने सिर्फ मुरली को कान से पहले सुना। सुना भी और दूसरों को सुनाया भी। सुनने-सुनाने तक बुद्धि गई। जो मुरली में बात बोली गई उस मुरली की बात का मनन-चिंतन-मंथन नहीं किया।

Time: 01.02.34-01.06.23

Student: Baba, Lakshmi and Narayan have been said to be intelligent as well as ignorant (*buddhu*).

Baba: Lakshmi and Narayan have been said to be ignorant as well. Lakshmi and Narayan have been said to be intelligent as well. Baba indulges in doublespeak☺. Yes, then what is the question?

Student: What is its reason?

Baba: What is its reason? Lakshmi and Narayan have been said to be ignorant as well in the murli. In one murli it has been said that Lakshmi and Narayan are ignorant. There is no knowledge in their intellect at all. And in another murli it has been said that Lakshmi and Narayan are intelligent; that is why they are the masters of the world. So, are these two Lakshmis and Narayans, two different couples or is it about just one couple? (Students: There are two couples.) Both couples are different. Those who are intelligent become masters of the world in this Confluence Age itself. They become controllers of the entire world because they are intelligent. They have the wisdom to understand Baba's vani. And which Lakshmi and Narayan are ignorant? The Lakshmi and Narayan of the Golden Age. Which souls will become that? (Someone said: Radha-Krishna.) What is meant by Radha and Krishna? Dada Lekhraj, Om

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Radhey Mamma, who just heard the murlis through their ears first. They heard as well as narrated to others. The intellect was limited to listening and narrating. They did not think and churn the versions that were narrated in the murli.

इसलिए मुरली में बाबा ने बोला भी है - इस समय गीता ज्ञानामृत नहीं कहेंगे। गीता ज्ञान तो है। मुरलियों को क्या कहेंगे? गीता ज्ञान है, लेकिन गीता ज्ञान का अमृत नहीं है। अमृत कैसे निकाला जाता है? सार, मक्खन तब निकलता है जब उसको मंथन किया जाता है, बिलोया जाता है। वो मनन-चिंतन-मंथन ब्रह्मा या ब्रह्मा के फालोवर्स ने नहीं किया। तब भी नहीं किया और आज भी नहीं करना चाहते। वो मुसलमान धर्म में कनवर्ट होने वाले हैं सब जो कान में उंगली दे लेते हैं - हम ज्ञान नहीं सुनेंगे। अल्लाह मियाँ को याद करो। मुसलमान क्या करते हैं भक्तिमार्ग में? मस्जिद में क्या करते हैं? कान में उंगली दे करके - अल्लाह-ओ-अकबर। तो ज्ञान के बगैर सद्गति हो जाएगी? शास्त्रों में भी लिखा हुआ है रिते ज्ञानान मुक्ति। बाबा ने भी बोला है - ज्ञान से सद्गति होती है। और ज्ञान कहाँ से आता है? ज्ञान एक बाप से आता है। ये मुरलियाँ एक बाप शिव ने बोली है। ब्रह्मा ने या राम की आत्मा ने नहीं बोली है। एक आत्मा से ही ज्ञान आता है। बाकी राम-कृष्ण से लेकर ए टू ज़ेड 63 जन्मों में सारी आत्माएं अज्ञान सुनाने वाली हैं।

This is why Baba has also said in the murli: At this time it will not be called the nectar of the knowledge of the Gita. It is no doubt the knowledge of the Gita. What will the murlis be called? It is the knowledge of the Gita, but it is not the nectar of the knowledge of the Gita. How is nectar extracted? The essence, the cream is extracted when it is churned, whipped. That thinking and churning was not done by Brahma or his *followers*. They neither churned at that time nor do they want to churn now. All of them, who put a finger in their ears saying: 'We will not listen to the knowledge, remember Allah Miyaan' are going to convert to the Muslim religion. What do Muslims do in the path of *bhakti*? What do they do in the mosques? They put a finger in their ear [and say:] Allah-O-Akbar. So, will they attain true liberation without knowledge? It has been written in the scriptures as well: *Ritey gyaanaann mukti*[11]. Baba has also said: True liberation takes place through knowledge. And where does knowledge come from? Knowledge comes from the one Father. The one Father Shiva has narrated these murlis. The soul of Brahma or Ram have not narrated it. Knowledge comes only from one soul. As for the rest Ram, Krishna and A to Z all the souls narrate ignorance in the 63 births. (Concluded.)

[11] There cannot be liberation without knowledge.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info